भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ

1. वेद की प्रामाणिकता में विश्वास

भारतीय दर्शन ही नहीं बल्कि समस्त ज्ञान का आधार वेद ही है। वेद भारत के लिए ही नहीं बल्कि विश्व का सर्वोतम और अनादि ज्ञान का भंडार है। इसमें सृष्टि विद्या के जिन मूल तत्त्वों का वर्णन किया गया है वे पूर्णतः विज्ञान एवं तर्कसम्मत हैं। इनमें विश्व की उत्पति, स्थिति और प्रलय, आत्मा और जीव, समाज, संगठन इत्यादि के मूल सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये है और मानव जीवन के उन कर्त्तव्यों का निरूपण किया गया है, जिनके बिना उसकी सफलता असम्भव है।

वेद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वैदिक ऋषि एवं महर्षि जाति, सम्प्रदाय एवं देश से बन्धे नहीं थे और इसीलिए वेद मानव प्रकृति को ध्यान में रखकर मनुष्य मात्र के कल्याणार्थ उनकी योजना निर्मित करने की सीख देता है।

इन विशेषताओं के आधार पर ही प्राचीन युग में भारत ही जगद्गुरू था। यदि आज भी उसे जीवन में अपनाने की कोशिश की जाय तो बहुत हद तक विश्व की समस्या का समाधान हो सकता है।

2. जीवन के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण

जहाँ पाश्चात्य विचारकों के लिए दर्शन एक मानसिक व्यायाम मात्र है वहाँ भारतीय दार्शनिकों के लिए दर्शन युक्तिपूर्वक तत्त्वविवेचन करने का प्रयत्न है।

भारतीय दर्शन का दृष्टिकोण जीवन से जुड़े रहने के कारण उचित एवं व्यावहारिक है।

3. भारतीय दर्शन का व्यापक तथा उदार दृष्टिकोण

यद्यपि भारतीय दर्शन की अनेक शाखायें हैं और उनमें मतैक्य नहीं है, फिर भी वे एक दूसरे की उपेक्षा नहीं करते हैं। सभी मतावलम्बी एक दूसरे के विचारों को समझने की कोशिश करते है। इसी उदार दृष्टि के कारण यहॉ पहले दूसरे मत की समीक्षा करके अपने मत की

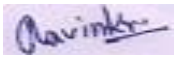

स्थापना की जाती है। उदाहरण के लिए वेदान्त दर्शन में चार्वाक, बौद्ध, जैन, सांख्य, न्याय–वैशेषिक आदि मतों पर विचार किया गया है।

4. आध्यात्मिक असंतोष

भारतीय दर्शन की उत्पति आध्यात्मिक असंतोष से हुई है विश्व में दुःख एवं बुराई को पाकर यहाँ के चिन्तकों में असंतोष उत्पन्न हो गया। इस असंतोष को आध्यात्मिक असंतोष कहा जाता है। इसी असंतोष के फलस्वरूप उनका दार्शनिक चिन्तन प्रारम्भ होता है।

कुछ आलोचकों ने भारतीय दर्शन में दुःखो का विशद् वर्णन पाकर इसे निराशावादी कहा है। किन्तु गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर स्पष्ट हो जाता है कि यह आक्षेप उचित नहीं है। भारतीय दर्शन का आरम्भ भले ही निराशावाद से हुआ हो, परन्तु इसका अन्त आशावाद में होता है।

5. विश्व को एक नैतिक रंगमच मानना

प्रायः सभी भारतीय विचारक विश्व को एक नैतिक रंगमंच मानते हैं। मनुष्य अपने पूर्व कर्म के मुताबिक ईश्वर या प्रकृति से शरीर, इन्द्रिय एवं वातावरण से प्राप्त संस्कार के कारण विश्व रूपी रंगमच पर उपस्थित होता है और अपनी–अपनी भूमिका को अदा करता है।

6. विश्व की शाश्वत नैतिक व्यवस्था में विश्वास

विश्व में एक नैतिक व्यवस्था कायम है। वह क्षणिक नहीं बल्कि शाश्वत है, वेदों से लेकर आज तक भारतीय दार्शनिकों ने इस व्यवस्था को अपने–अपने ढंग से पुष्टि प्रदान की है। वैदिक काल के ऋषियों को इसमें अगाध श्रद्धा थी वे इसे ऋत् शब्द से सम्बोधित करते रहे हैं। ऋत् शब्द का अर्थ जगत् की व्यवस्था होता है। जगत् की व्यवस्था के अन्तर्गत नैतिक व्यवस्था भी समाविष्ट रहती है। यही ऋत् का विचार उपनिषदों में आकर कर्मवाद का रूप ले लेता है।

7. आत्मा के अस्तित्त्व में विश्वास

चार्वाक के अतिरिक्त सभी भारतीय दार्शनिकों ने आत्मा की सत्ता को अपने–अपने ढंग से स्वीकार किया है। यह आत्मा शरीर से भिन्न नित्य एवं अविनाशी सत्ता है।

8. बंधन एवं मोक्ष में विश्वास

अज्ञान दुःख एवं बन्धन को उत्पन्न करता है और ज्ञान से मोक्ष मिलता है। भारतीय दर्शन में अज्ञान को मुक्ति का कारण बतलाया गया है। जन्म मरण एवं पुनर्जन्म के चक्कर में पड़कर दुःख झेलना ही बन्धन है। जन्म मरण या पुनर्जन्म से छुटकारा पाना ही मोक्ष कहलाता है।

9. आत्म नियन्त्रण एवं एकाग्रचिन्तन पर जोर

भारतीय चिन्तकों की दृष्टि में मुक्ति के लिए आत्म नियन्त्रण, एकाग्रचिन्तन एवं एकान्त साधना जरूरी है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए मस्तिष्क से बुरे विचारों को निष्कासित करके उत्तम अथवा शुभ विचारों को प्रतिष्ठित करना एवं आत्मसंयम रखना अनिवार्य है।

10. मोक्ष की अवधारणा में विश्वास

चार्वाक को छोड़ कर सभी भारतीय दार्शनिकों ने मोक्ष को ही जीवन का चरम लक्ष्य माना है। इनमें कुछ दार्शनिकों ने दुःखरहित अवस्था को मोक्ष कहा है तो कुछ ने मोक्ष को आनन्द की अवस्था कहा है।

इस तरह स्पष्ट है कि भारतीय दर्शनशास्त्र अव्यावहारिक नहीं बल्कि व्यावहारिक एवं अनुकरणीय है। इसके अनुकरण से समाज में व्याप्त बहुत सारी समस्याओं का समाधान संभव है।

0000